23/02/2026

Dr. Arun Kumar Ray
Assistant Professor
Dept. of Psychology
U.R. College Rosera Samastipur

Paper – Developmental Psychology

Semester – IIIrd (MJC) IIIrd

TOPIC :– Characteristics of Physical Development

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इसके लिए व्यक्ति का शारीरिक विकास आवश्यक है। मानव के सिर से पैर तक के संभी अंगो, इन्द्रियों तथा उनकी क्रियाओं से युक्त – रचना को मानव–शरीर की संज्ञा दी गई है, तथा इन सभी का विकास शारीरिक विकास कहलाता है। शारीरिक विकास से तात्पर्य बालक के आयु के अनुरूप शारीरिक आकार, शारीरिक अनुपात, हड्डियों, मांसपेशियों, दाँत – एवं तन्त्रिका–तन्त्र के समुचित विकास से है।

* शारीरिक विकास दृष्टिगत होता है – इसका तात्पर्य है कि शारीरिक विकास को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। जैसे बालक के शरीर में हो रहे विकास को हम प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं।

* शारीरिक विकास गर्भाच्धान के समय ही शुरु हो जाता है – शारीरिक विकास बालक के जन्म से पूर्व से ही शुरु हो जाता है। गर्भावस्था में भी बालक का निरन्तर शारीरिक विकास होता रहता है।

* शारीरिक विकास की गति विभिन्न अवस्थाओं में भिन्न – भिन्न रहती है – शारीरिक विकास की गति सभी अवस्थाओं में समान नहीं होती है। यह तीव्र व धीमी होती रहती है। भ्रूण काल में बालक का विकास बहुत तेजी से होता है।

* शारीरिक विकास का एक निश्चित क्रम होता है :– यह बालक के सिर से पैरों की ओर एक निश्चित क्रम में बढ़ने वाली प्रक्रिया है।

Developmental Psychology 23/02/2026

* शारीरिक विकास नवीन स्वरूप को धारण करता है— शारीरिक विकास के अन्तर्गत बालक का रूप नवीन स्वरूप को धारण करता है। सभी अंगों की निश्चित अनुपात में वृद्धि होती है। यहाँ - नवीन स्वरूप धारण करने का अर्थ है कि पुराने अंगों का एक निश्चित अनुपात में विकसित होना।

* शारीरिक अनुपात में परिवर्तन होता है— शरीर के आकार में वृद्धि होने के साथ-साथ बच्चों के शारीरिक अनुपात में भी परिवर्तन दिखाई देता है। जैसे जन्म के समय बच्चे का - सिर उसके शरीर की सम्पूर्ण लम्बाई का 1/4 भाग होता है परन्तु जैसे-जैसे बालक का शारीरिक विकास होता है, बालक का सिर अपने अनुपात में ह्रास होता चला जाता है।

* आन्तरिक अंगों का विकास :— शारीरिक विकास में शरीर के बाह्य अंगों में परिवर्तन के साथ-साथ शरीर के आन्तरिक अंगों में भी परिवर्तन को देखना आवश्यक हो जाता है। जन्म के बाद से ही शरीर में बाह्य एवं आन्तरिक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। बालक के शरीर में होने वाले इस बाह्य एवं आन्तरिक विकास के कारण बालक अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने में पर्याप्त रूप से स्वावलम्बी बनता जाता है।